कर चले हम फ़िदा (कैफ़ी आज़मी)

पाठ का परिचय

संसार में सभी प्राणियों को अपना जीवन प्रिय होता है। वे अपने जीवन को बचाने के लिए अंत तक लड़ते हैं, लेकिन सैनिक का जीवन इसके ठीक विपरीत होता है। वह अपने नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन की रक्षा के लिए लड़ता है। इस लड़ाई में वह अपने प्राणों की आहुति भी दे देता है। प्रस्तुत पाठ ऐसे ही सैनिकों के हृदय की आवाज़ को बयान करता है। यह युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म 'हकीकत' का गीत है, जिसमें देश पर प्राण न्योछावर करते सैनिक अपने देशवासियों से कुछ अपेक्षाएँ करते हैं। वे देशवासी कोई और नहीं, बल्कि हम और आप ही हैं। पाठ पढ़कर हम स्वयं से पूछें कि हम वे अपेक्षाएँ पूरी कर रहे हैं या नहीं?

काव्यांशों का भावार्थ

कर चले हम फ़िदा

1. कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!

भावार्थ–बलिदानी सैनिक कहता है–हे मेरे फ़ौजी साथियो और देशवासियो! मैं और मेरे अन्य सैनिक साथी अपने देश की सुरक्षा के लिए अपना शरीर और प्राण न्योछावर करके इस दुनिया से जा रहे हैं। अब यह देश तुम्हारे हवाले है। तुम्हीं इसकी रक्षा करना। यद्यपि देश के लिए लड़ते-लड़ते हमारी साँस रुकने लगी थी, नसें ठंड के कारण जमने लगी थीं, फिर भी हम बर्फ़ से ढकी सीमाओं पर आगे-ही-आगे बढ़ते चले गए। हम एक क्षण के लिए भी आगे बढ़ने से नहीं रुके। देश की सुरक्षा करते हुए यदि हमारे सिर कट भी गए तो हमें इसका कोई दुःख नहीं, हमें प्रसन्नता है कि हमने जीते-जी हिमालय का सिर नहीं झुकने दिया। मरते समय भी हमारे मन में उत्साहपूर्वक बलिदान और संघर्ष का जोश बना रहा। अब हम बलिदान देकर दुनिया से जा रहे हैं; अतः अब देश की बागडोर तुम्हारे हाथ में है। इसकी रक्षा करना।

2. ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोज़ आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुलहन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!

भावार्थ–बलिदानी सैनिक अपने साथी सैनिकों से और सभी देशवासियों से कहता है–हे मेरे साथियो! ज़िंदगी जीने के अवसर तो बहुत मिलते हैं, परंतु देश के लिए बलिदान होने का पवित्र अवसर कभी-कभी आता है। आज तुम्हारे लिए बलिदान का यह पुण्य अवसर आ गया है। इस समय जो नौजवान अपने शत्रु से लड़ता हुआ खून से लथपथ नहीं होगा, वह अपनी धरती के सौंदर्य और प्रेम को बदनाम करेगा। ऐसे जवानों का देशप्रेम व्यर्थ है। आज तो देश की धरती ही तुम्हारे लिए दुलहन है। तुम्हें इसकी लाज की रक्षा करनी है। अब यह देश तुम्हारे हवाले है। इसकी रक्षा के लिए बलिदान-मार्ग पर बढ़ चलो।

3. राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!

भावार्थ–बलिदानी सैनिक नौजवान साथियों से कहता है–हे मेरे देशवासियो! हमने देश के लिए जो बलिदान दिए हैं, उसकी राह

कभी सूनी नहीं होनी चाहिए। देश के लिए मर-मिटने वाले सैनिकों के नए-नए जत्थे तैयार होते रहने चाहिए। वे बलिदान के लिए सहर्ष आगे आते रहने चाहिए। एक बार हमने यह संघर्ष और बलिदान का उत्सव मना लिया तो फिर अगला उत्सव विजय का ही होगा। आशय यह है कि बलिदान के पथ पर हमें विजय अवश्य प्राप्त होगी। देखो, आज ज़िंदगी खुद आगे बढ़कर मौत को गले से लगा रही है। आशय यह है कि संघर्षशील नवयुवक उत्साहपूर्वक बलिदान देने को तैयार हैं।

हे मेरे नौजवान साथियो! आज देश के लिए मर-मिटने का अवसर आया है। तुम मरने के लिए तैयार हो जाओ। हम तो बलिदान करके दुनिया से जा रहे हैं। अब यह देश तुम्हारे सहारे छोड़कर जा रहे हैं। इसे शत्रुओं से बचाकर रखना।

4. खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!

भावार्थ–देश के लिए अपना बलिदान करने वाला सैनिक देशवासियों से कहता है– हे मेरे देशवासियो! तुम अपने खून से धरती पर एक रेखा खींच दो। आशय यह है कि तुम अपने बलिदान से शत्रु को सीमा के बाहर ही रोक दो। हमारी सीमा के अंदर फिर-से कोई रावण न घुस आए। फिर-से कोई अत्याचारी आक्रमणकारी हमारे देश में न घुस आए। अगर किसी आक्रमणकारी का हाथ हमारी मातृभूमि पर प्रहार करने के लिए उठे तो तुम उसे तोड़कर रख दो। सावधान रहो, कहीं कोई शत्रु मातृभूमिरूपी सीता के दामन पर हाथ न लगा पाए। इसकी रक्षा के लिए तुम्हीं राम हो, तुम्हीं लक्ष्मण हो। स्वयं को पहचानो। तुम्हीं भारत के रक्षक हो, रखवाले हो। अब हम यह देश तुम्हारे हवाले करके दुनिया से जा रहे हैं। इसकी रक्षा करना।

शब्दार्थ

फ़िदा = न्योछावर। **हवाले** = सौंपना। **बाँकपन** = वीरता का भाव। **रुत** = मौसम। **हुस्न** = सुंदरता। **रुस्वा** = बदनाम। **खूँ** = खून। **कुर्बानियाँ** = बलिदान। **वीरान** = सुनसान। **काफ़िले** = यात्रियों के समूह। **फतह** = जीत। **जश्न** = ख़ुशी।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) साँस थमती गई, नब्ज़ ज़मती गई,
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया,
कट गए सर हमारे तो कुछ गम नहीं,
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया,
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो,
ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोज़ आती नहीं *(CBSE 2023; CBSE SQP 2023-24)*

1. **'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' का अर्थ है–**
   (क) हिमालय को सजाना
   (ख) हिमालय की हिफ़ाज़त करना
   (ग) भारत के गौरव को बनाए रखना
   (घ) भारत का गुणगान करना।
2. **कवि द्वारा 'साथियो' संबोधन का प्रयोग .... के लिए किया गया है।**
   (क) कवियों (ख) शहीदों
   (ग) सैनिकों (घ) देशवासियों।
3. **'मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो' कवि ने ऐसा कहा है क्योंकि–**
   (क) सैनिक धरती को दुल्हन की तरह सजा हुआ देखकर प्रसन्न हो गए।
   (ख) सैनिकों ने मातृभूमि की रक्षा हेतु जोश और साहस से युद्ध किया।
   (ग) देशवासियों को बार-बार पुकारकर सैनिकों ने उनमें देशभक्ति का भाव जगाया।
   (घ) सैनिकों ने कभी भी टेढ़ेपन से बातचीत नहीं की, देशरक्षा ही एकमात्र उद्देश्य रहा।
4. **'जान देने की रुत रोज़ आती नहीं' का भाव है–**
   (क) सैनिकों के हृदय में जीवित रहने की इच्छा नहीं
   (ख) जीवित रहने का समय आनंददायक होना चाहिए
   (ग) आत्मबलिदान द्वारा भी देश की रक्षा के लिए तत्पर
   (घ) जीवन और मरण सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर निर्भर।
5. **इस काव्यांश का संदेश यह है कि हमें–**
   (क) हुस्न और इश्क को रुसवा करना चाहिए
   (ख) देश को दूसरों के हवाले कर देना चाहिए
   (ग) धरती को दुल्हन की तरह सजाना चाहिए
   (घ) देश पर कुर्बान होने के लिए तैयार रहना चाहिए।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(2) ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोज़ आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुलहन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!

1. **काव्यांश के कवि का क्या नाम है–**
   (क) वीरेन डंगवाल (ख) माखनलाल चतुर्वेदी
   (ग) कैफ़ी आज़मी (घ) नीरज।
2. **जान देने की रुत किसे कहा गया है–**
   (क) प्राकृतिक आपदा को
   (ख) मृत्यु के समय को
   (ग) देश पर बलिदान होने के अवसर को
   (घ) जवानी के समय को।
3. **देश की धरती क्या बनी हुई है–**
   (क) दुलहन (ख) माता
   (ग) बहन (घ) फुलवारी।

4. **काव्यांश में 'खूँ में नहाना' का क्या अर्थ है–**
(क) खून बहाना (ख) खून उबलना
(ग) देश के लिए मर मिटना (घ) खून में स्नान करना।

5. **कौन–सी रुत रोज़ नहीं आती–**
(क) नहाने की (ख) खाने की
(ग) सोने की (घ) जान देने की।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(3) राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए क़ाफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो! ***(CBSE 2023)***

1. **सैनिकों की देशवासियों से क्या अपेक्षा है–**
(क) देश की सुरक्षा की (ख) देश के उत्थान की
(ग) देश के विस्तार की (घ) देश के विकास की।

2. **निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए–**
(a) सैनिक सर पर कफ़न बाँधने की बात करते हैं, क्योंकि उनके जीवन का अंत निकट है।
(b) सैनिक सर पर कफ़न बाँधने की बात करते हैं, क्योंकि वे अत्यंत घायल अवस्था में हैं।
(c) सैनिक सर से कफ़न बाँधने की बात करते हैं, क्योंकि देशहित में मृत्यु का भी सामना करना पड़ सकता है।
(d) सैनिक सर से कफ़न बाँधने की बात करते हैं, क्योंकि युद्ध के दौरान ऐसा करने की एक प्राचीन परंपरा है।
पद्यांश से मेल खाते हुए उपर्युक्त कथन/कथनों के लिए नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए–
(क) केवल (b) (ख) केवल (c)
(ग) (a) और (b) (घ) (c) और (d).

3. **कवि किस काफ़िले को सजाने की बात कह रहा है–**
(क) सीमा पर रसद पहुँचाने वाले काफ़िले को
(ख) सीमा पर भोजन पहुँचाने वाले काफ़िले को
(ग) देश की सीमा पर तैनात सैनिकों के काफ़िले को
(घ) देश की रक्षा हेतु तत्पर सैनिकों के काफ़िले को।

4. **पद्यांश में 'कट गए सर हमारे' में 'हमारे' संबोधन का प्रयोग किसके लिए हुआ है–**
(क) देश की रक्षा हेतु कुर्बान होते सैनिकों के लिए
(ख) देश की रक्षा हेतु घायल होते सैनिकों के लिए
(ग) देश की सीमाओं पर पहरा देते सैनिकों के लिए
(घ) देश की उत्तरी क्षेत्रों में तैनात सैनिकों के लिए।

5. **'राह कुर्बानियों की न वीरान हो' पंक्ति में किस 'राह' की बात की गई है–**
(क) मातृभूमि की रक्षा हेतु अहिंसा की राह
(ख) मातृभूमि की रक्षा हेतु बलिदान की राह
(ग) दुश्मनों से अहिंसात्मक बदला लेने की राह
(घ) दुश्मनों से शांतिपूर्ण समझौता करने की राह।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख)।

(4) खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!

1. **काव्यांश में कौन, किसका आह्वान कर रहा है–**
(क) सेनापति अपने सैनिकों का
(ख) गुरु अपने शिष्यों का
(ग) नेता अपनी जनता का
(घ) सैनिक अपने देशवासियों का।

2. **रावण को आने से रोकने हेतु कवि क्या करने के लिए कहता है–**
(क) दीवार बनाने के लिए
(ख) अपने खून से ज़मीन पर लकीर खींचने के लिए
(ग) रावण से युद्ध करने के लिए
(घ) राम-लक्ष्मण को बुलाने के लिए।

3. **सीता का दामन छूने की कोशिश करने वालों के प्रति कवि क्या करने की बात कहता है–**
(क) उसकी गरदन काट डालने के लिए कहता है
(ख) उसकी आँखें निकाल देने के लिए कहता है
(ग) उसके हाथ तोड़ डालने के लिए कहता है
(घ) उसे बंदी बना लेने के लिए कहता है।

4. **पद्यांश में रावण किसका प्रतीक है–**
(क) राक्षस का (ख) एक राजा का
(ग) देश के शत्रु का (घ) हिंसक पशु का।

5. **'सीता' किसका प्रतीक है–**
(क) देश की धरती का (ख) बहन का
(ग) बेटी का (घ) श्रीराम की पत्नी का।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'कर चले हम फ़िदा' गीत किसने लिखा है–**
(क) नीरज ने (ख) कैफी आज़मी ने
(ग) प्रदीप ने (घ) रामधारी सिंह 'दिनकर' ने।

2. **कैफ़ी आज़मी का जन्म कब हुआ–**
(क) 19 जनवरी, 1919 को (ख) 20 जनवरी, 1919 को
(ग) 25 जनवरी, 1919 को (घ) 10 जनवरी, 1919 को।

3. **कैफ़ी आज़मी का जन्म उत्तर प्रदेश के किस नगर में हुआ–**
(क) कानपुर में (ख) लखनऊ में
(ग) आज़मगढ़ में (घ) अलीगढ़ में।

4. **'कर चले हम फ़िदा' गीत किस फ़िल्म का है–**
(क) ललकार (ख) पूरब और पश्चिम
(ग) उपकार (घ) हकीकत।

5. **कविता में कौन, किसका आह्वान कर रहा है–**
(क) सेनापति अपने सैनिकों का
(ख) गुरु अपने शिष्यों का
(ग) नेता अपनी जनता का
(घ) सैनिक अपने देशवासियों का।

6. **रावण को आने से रोकने हेतु कवि क्या करने के लिए कहता है–**
(क) दीवार बनाने के लिए
(ख) अपने खून से ज़मीन पर लकीर खींचने के लिए
(ग) रावण से युद्ध करने के लिए
(घ) राम-लक्ष्मण को बुलाने के लिए।

7. **सीता का दामन छूने की कोशिश करने वालों के प्रति कवि क्या करने की बात कहता है–**
   (क) उसकी गरदन काट डालने के लिए कहता है
   (ख) उसकी आँखें निकाल देने के लिए कहता है
   (ग) उसके हाथ तोड़ डालने के लिए कहता है
   (घ) उसे बंदी बना लेने के लिए कहता है।
8. **गीत में रावण किसका प्रतीक है–**
   (क) राक्षस का (ख) एक राजा का
   (ग) देश के शत्रु का (घ) हिंसक पशु का।
9. **कवि किस चीज़ से ज़मीन पर लकीर खींचने के लिए कहता है–**
   (क) डंडे से (ख) पत्थर से
   (ग) खून से (घ) हाथ से।
10. **'जिंदगी मौत से मिल रही है गले' पंक्ति का क्या भाव है–**
    (क) आत्मबलिदान देना (ख) मित्रों से गले मिलना
    (ग) शत्रुओं को पराजित करना (घ) अपनी हार स्वीकार करना।
11. **देश पर बलिदान होता सैनिक देश को किसके हवाले करने की बात करता है–**
    (क) राजनेताओं के (ख) शत्रु सैनिकों के
    (ग) देशवासियों के (घ) किसानों के।
12. **'छू न पाए सीता का दामन कोई'–पंक्ति में सीता से अभिप्राय है–** ***(CBSE 2023)***
    (क) भारत-माता (ख) देश की बहन-बेटियाँ
    (ग) (क) और (ख) दोनों (घ) तीनों में से कोई नहीं।
13. **मरते-मरते भी सैनिकों में क्या रहा–**
    (क) क्रोध (ख) प्रेम
    (ग) दीनता (घ) बाँकपन।
14. **कैसे मौसम बहुत हैं–**
    (क) गरमी के (ख) वर्षा के
    (ग) जिंदा रहने के (घ) मरने के
15. **जो जवानी खून में 'नहीं' बहती वह किसे बदनाम करती है–**
    (क) माता-पिता को (ख) हुस्न और इश्क को
    (ग) देश और समाज को (घ) इनमें कोई नहीं।
16. **कौन-सी राहें वीरान नहीं होनी चाहिए–**
    (क) घर जाने की (ख) विदेश जाने की
    (ग) कुर्बानियों की (घ) तीर्थों पर जाने की।
17. **कविता में धरती की तुलना किससे की गई है–**
    (क) माता से (ख) पिता से
    (ग) बहन से (घ) दुल्हन से।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ) **6.** (ख) **7.** (ग) **8.** (ग) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (ग) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (ग) **15.** (ख) **16.** (ग) **17.** (घ)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : कवि ने 'साथियो' संबोधन किसके लिए प्रयोग किया है?

उत्तर : कवि ने 'साथियो' संबोधन देशवासियों के लिए प्रयोग किया है; क्योंकि वह सभी देशवासियों को बताना चाहता है कि देश की रक्षा के लिए सीमा पर प्राण लुटाने वाले सैनिकों की अपने देशवासियों से कुछ अपेक्षाएँ होती हैं। वे अपेक्षाएँ बलिदानी सैनिकों के माध्यम से पाठ में बता दी गई हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें पूरा करें। इसीलिए यह संबोधन देशवासियों के लिए अर्थात् हम सबके लिए प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 2 : 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?

उत्तर : हिमालय भारत के उत्तर में उसके रक्षक और प्रहरी के समान स्थित है। यह हमारे देश की आन-बान और शान का प्रतीक है। सन् 1962 ई० में चीन ने हमारे इसी गौरव पर हमला किया था। हमारे वीर सैनिकों ने हिमालय की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी और उसके सम्मान पर कोई आँच नहीं आने दी थी। इस प्रकार हिमालय हमारे देश के सम्मान और हमारे वीर सैनिकों की वीरता का प्रतीक है।

प्रश्न 3 : इस गीत में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है? ***(CBSE 2015, 16)***

उत्तर : दुलहन रूप-सौंदर्य और प्रेम की प्रतीक होती है। वह प्रेम के प्रतीक लाल वस्त्रों से सजी रहती है। उसका पति उसकी रक्षा के लिए प्राणों की बाज़ी लगा देता है। सन् 1962 ई० में हिमालय क्षेत्र की सुंदर भूमि भारतीय सैनिकों के बलिदान से लाल हो गई थी। युवा सैनिकों ने उसके प्रेम में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया था। इसीलिए कवि ने उस धरती को लाल जोड़े में सजी सुंदर दुलहन कहा है।

प्रश्न 4 : गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि वे जीवनभर याद रह जाते हैं?

उत्तर : गीत काव्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें मार्मिक भावनाएँ छिपी रहती हैं। जब गीत के साथ संगीत का मेल हो जाता है और कोई अच्छा गायक उसे गाता है तो वह हृदय को छू जाता है। गीतों में व्यक्त कोमल भावनाएँ एवं मानवीय संवेदनाएँ हर सुनने वाले को अपने मन की भावनाएँ लगती हैं। सुनने में मधुर ये भावनाएँ उसके मन-मस्तिष्क में अपनी अमिट छाप छोड़ती हैं, इस कारण गीत जीवनभर याद रह जाते हैं। प्रस्तुत गीत देशप्रेम से युक्त है। इसे प्रसिद्ध गायक मोहम्मद रफ़ी ने अपनी रोंगटे खड़े कर देने वाली आवाज़ में गाया है; अतः यह जीवनभर याद रहने वाला गीत है।

प्रश्न 5 : कुरबानियों की राह कौन-सी है?

उत्तर : देश की रक्षा का कार्य अर्थात् सैनिक-जीवन कुरबानियों की राह है। देशभक्ति का वह ऐसा रास्ता है, जिस पर चलता हुआ एक देशभक्त जवान अपने देश पर बलिदान हो जाता है। उसे कदम-कदम पर बलिदान होने के अवसर मिलते रहते हैं।

प्रश्न 6 : क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?

अथवा **'कर चले हम फ़िदा' गीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है?** ***(CBSE 2016 , 17)***

उत्तर : हाँ, इस गीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। यह गीत 'हकीकत' फ़िल्म का है, जो सन् 1962 ई० के भारत-चीन युद्ध पर बनी है। इसमें दिखाया गया है कि विषम परिस्थितियों में संसाधनों की कमी होते हुए भी हमारे सैनिक वीरता से लड़े। उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया, लेकिन शत्रु को भारतभूमि पर पैर नहीं रखने दिया।

प्रश्न 7 : कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

उत्तर : किसी एक ही गंतव्य और उद्देश्य के लिए मिलकर यात्रा करने वाले यात्रियों के समूह को काफ़िला कहते हैं। यहाँ काफ़िला भारतीय देशभक्तों के समूह को कहा गया है; क्योंकि वे सब एक ही उद्देश्य के लिए आगे बढ़ रहे होते हैं। अपने देश के लिए मर-मिटने वाले ऐसे लोगों के समूह (काफ़िले) बनते रहने चाहिए। तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में देश के सैनिक चीनी सैनिकों को खदेड़कर अपने देश की रक्षा का लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ रहे थे। कवि कहता है कि जब तक दुश्मन मैदान छोड़कर भाग नहीं जाता, तब तक इस तरह की सैनिकों की टोलियाँ तैयार होती रहनी चाहिए और आगे बढ़ती जानी चाहिए।

प्रश्न 8 : 'छू न पाए सीता का दामन कोई' कथन का क्या आशय है?

उत्तर : सीता पवित्रता और स्वाभिमान का प्रतीक हैं। इस कथन के माध्यम से कवि बताना चाहता है कि यह भारतभूमि सीता माँ के समान पवित्र और हमारे स्वाभिमान की प्रतीक है। कोई शत्रुरूपी रावण इसके मान-सम्मान और इसकी पवित्रता को ठेस न पहुँचाए, इसके लिए तुम्हें सदैव बलिदान करने हेतु तैयार रहना होगा।

प्रश्न 9 : इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?

उत्तर : 'सर पर कफ़न बाँधना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है—मरने के लिए तैयार रहना। गीत में यह इस बात की ओर संकेत करता है कि देश की रक्षा के लिए बलिदान होने की परंपरा कभी समाप्त नहीं होगी। इसके लिए पहले भी बलिदान होते रहे हैं और आगे भी होंगे। इसलिए यह केवल सैनिकों का ही दायित्व नहीं है, बल्कि देश की रक्षा के लिए तो हर देशवासी को सर पर कफ़न बाँधकर रहना होगा।

प्रश्न 10 : 'कर चले हम फ़िदा' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2019)***

अथवा **'कर चले हम फ़िदा'—कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए उसका प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।** ***(CBSE 2017)***

अथवा **'कर चले हम फ़िदा' कविता का प्रतिपाद्य लगभग 100 शब्दों में लिखिए।** ***(CBSE 2018)***

उत्तर : कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए उपर्युक्त प्रश्न संख्या 6 के उत्तर का उल्लेख करें। प्रस्तुत कविता 'कर चले हम फ़िदा' उर्दू के प्रगतिशील तथा अतिलोकप्रिय शायर कैफ़ी आज़मी द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने उन सैनिकों के हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्त किया है, जिन्हें अपने देश के प्रति किए गए हर कार्य, हर कदम, हर बलिदान पर गर्व है। इसलिए उन्हें प्रत्येक देशवासी से कुछ आशाएँ हैं, अपेक्षाएँ हैं कि उनके इस संसार से विदा हो जाने के बाद भी वे देश की आन, बान, शान पर आँच नहीं आने देंगे, बल्कि समय आने पर अपना बलिदान देकर देश की रक्षा करेंगे। यही इस कविता का प्रतिपाद्य है।

प्रश्न 11 : आज़ाद होने के बाद सबसे मुश्किल काम है 'आज़ादी बनाए रखना'। आप इसके लिए क्या-क्या करेंगे?

उत्तर : अपनी आज़ादी को बनाए रखने के लिए हम निम्नलिखित कार्य करेंगे—

(i) यदि हमारे देश को किसी पड़ोसी देश से खतरा होगा तो हम सैनिकों की तरह देश की रक्षा के लिए प्राणों की बाज़ी लगा देंगे।

(ii) अपने देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए सांप्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद और नक्सलवाद का डटकर मुकाबला करेंगे।

(iii) देश की जड़ों को खोखला करने वाले भ्रष्टाचार का समूल नाश करने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न 12 : 'साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया।'— भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : भाव—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि सन् 1962 ई० के युद्ध में हिमालय पर लड़ने वाले सैनिकों की स्थिति बताना चाहता है। इसका भाव यह है कि चीनी आक्रमण के समय भारतीय सैनिकों ने हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों पर लड़ाई लड़ी। जमी हुई बर्फ़ में सैनिकों की साँसें घुटने लगीं। अर्थात् ऑक्सीजन की कमी के कारण साँस लेना कठिन हो गया। बर्फ़ के कारण उनकी नसों का खून जमने लगा। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। वे मरते दम तक आगे बढ़ते रहे और शत्रुओं को सीमा के बाहर खदेड़ने में लगे रहे।

प्रश्न 13 : 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है? ***(CBSE 2016)***

अथवा **'कर चले हम फ़िदा' गीत में गीतकार ने नवयुवकों को क्या संदेश दिया है?**

उत्तर : इस कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि देश पर बलिदान होना केवल सैनिकों का ही दायित्व नहीं है, बल्कि यह दायित्व तो प्रत्येक देशवासी का है। जिस देश का हर नागरिक स्वयं को एक सैनिक मानता है और देश पर कुर्बान होने के लिए तैयार रहता है, उस देश की तरफ़ कोई दुश्मन कभी आँख उठाकर भी नहीं देख सकता।

प्रश्न 14 : 'छू न पाए सीता का दामन कोई राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो'—भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : भाव—बलिदानी सैनिक अपने वीर देशवासियों से कहता है कि भारत की धरती उनके लिए सीता के समान पवित्र और रक्षणीय है। वे स्वयं राम और लक्ष्मण के समान सीता के संरक्षक हैं; अतः उन्हें जान देकर भी धरतीरूपी सीता की रक्षा करनी है। देश की पवित्रता पर कोई दाग न लग जाए—इसके लिए मर-मिटने का संकल्प उन्हीं को लेना है। वे देश की आन-बान के सच्चे संरक्षक हैं।

प्रश्न 15 : वतन पर बलिदान होता हुआ सैनिक अपने विषय में क्या बता रहा है?

उत्तर : सैनिक बता रहा है कि हे साथियो! हमने देश पर अपने प्राण न्योछावर कर दिए हैं, अब यह देश तुम्हारे हाथों में है। हमारी साँसें टूट रही थीं तथा ठंड के कारण हमारी नब्ज़ जमती जा रही थी, फिर भी हम आगे बढ़ते रहे। हमने अपने सर कटा दिए, लेकिन हिमालय के स्वाभिमान पर आँच नहीं आने दी। अब हम जा रहे हैं, देश की रक्षा का उत्तरदायित्व अब तुम्हारा है।

प्रश्न 16 : कवि किस राह को वीरान न होने देने की बात कहता है और क्यों?

उत्तर : कवि कुरबानियों की राह को वीरान न होने देने की बात कह रहा है। उसके अनुसार बलिदान होने की परंपरा कभी बंद नहीं होती। यह पहले भी थी और आगे भी चलती रहेगी; क्योंकि इस परंपरा के

बिना कोई देश या समाज सुरक्षित नहीं रह सकता। इसीलिए कवि कहता है कि कुरबानी की राह वीरान न हो, इसके लिए बलिदानियों की टोलियाँ तैयार होती रहनी चाहिए।

प्रश्न 17 : सैनिक को किन-किन स्थितियों का सामना करना पड़ता है?

उत्तर : एक सैनिक को बहुत विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। युद्ध में सदैव उसके सिर पर मौत का साया मँडराता रहता है। उसे ऐसे बर्फ़ीले क्षेत्र में रहना पड़ता है, जहाँ ठंड के कारण खून जम जाता है। बीहड़ जंगलों, रेगिस्तानों और अथाह समुद्र में भी वह अपना कर्तव्य निभाता है। सरदी, गरमी और वर्षा में वह अविचल रहता है। उसे अपने कर्तव्य के सामने भूख-प्यास की भी चिंता नहीं होती।

प्रश्न 18 : 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने किन पौराणिक पात्रों का उल्लेख किया है? वे किस-किसके प्रतीक हैं?

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' कविता में कवि ने राम, लक्ष्मण, सीता और रावण आदि पौराणिक पात्रों का उल्लेख किया है। इनमें 'राम-लक्ष्मण' देश-रक्षक सैनिकों, 'सीता' भारतभूमि और 'रावण' देश के दुश्मनों का प्रतीक है।

प्रश्न 19 : 'कर चले हम फ़िदा' गीत में सैनिकों की देशवासियों से क्या अपेक्षाएँ हैं? ***(CBSE 2020)***

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' गीत में सैनिकों को देशवासियों से अपेक्षाएँ हैं कि वे बलिदान की परंपरा को बनाए रखें। बलिदान के लिए नए-नए दस्ते तैयार होते रहें। देशवासी राम-लक्ष्मण बनकर सीतारूपी भारतभूमि की सदा रक्षा करते रहें।

प्रश्न 20 : 'राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो!' इस कथन से कवि क्या संदेश प्रकट करना चाहता है?

उत्तर : कवि ने देश की धरती को 'सीता' माना है। राम सीता के स्वामी थे और लक्ष्मण उनके सेवक थे। हमारे देश में प्रजातंत्र है। प्रजातंत्र में जनता ही शासक और जनता ही शासित होती है। कवि इस पंक्ति के द्वारा संदेश देना चाहता है कि तुम ही इस देश के स्वामी हो और तुम्हीं सेवक हो। जैसे राम और लक्ष्मण दोनों सीता के रक्षक थे, उसी प्रकार सभी नागरिकों का दायित्व है कि वे अपनी भारतभूमि की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें। कोई नागरिक यह न सोचे कि देश की रक्षा करने का काम तो केवल सैनिकों का है। यदि कोई रावणरूपी शत्रु हमारे देश की तरफ़ हाथ बढ़ाता है तो हमें उसके हाथों को काट डालना चाहिए।

प्रश्न 21 : 'कर चले हम फ़िदा' कविता में देशवासियों से क्या अपेक्षाएँ की गई हैं? क्या हम उन अपेक्षाओं को पूरा कर रहे हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : कविता में देशवासियों से अपेक्षाएँ की गई हैं कि जिस देश की आज़ादी और सम्मान के लिए हमारे सैनिक अपने प्राण न्योछावर कर रहे हैं, उनके बाद देशवासी उसे सँभालकर रखें। देश के सभी नागरिक देश की सुरक्षा, पवित्रता और विकास के लिए अपनी जवानी का सदुपयोग करें। देश के सभी नागरिक बलिदान की परंपरा को बनाए रखें तथा अपनी कुरबानी से ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करें कि कोई दुश्मन देश की तरफ़ आँख उठाकर न देखे। हम सब नागरिक इन अपेक्षाओं को पूरा कर रहे हैं। हम देश की सीमा पर डटे सैनिकों के साथ तन-मन-धन से तैयार खड़े रहते हैं। हमारे युवा देश के विकास में पूरे मनोयोग से लगे हैं, वे संसार में देश का नाम रोशन कर रहे हैं। हमारे देश ने जितने भी युद्ध लड़े, उनमें नागरिकों ने रक्तदान करके तथा तन-मन-धन से सैनिकों की सहायता की और इसी सहयोग से हमारे सैनिकों ने दुश्मन को हर बार धूल चटाई। कुछ दिग्भ्रमित लोग ज़रूर देश को हानि पहुँचाने का प्रयास यदा-कदा करते हैं, लेकिन हम उन्हें उसमें सफल नहीं होने देंगे।

प्रश्न 22 : 'कर चले हम फ़िदा' कविता के आधार पर बताइए कि एक सच्चे सैनिक को बलिदान के समय भी दुख का अनुभव क्यों नहीं होता? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : संसार में हर जीवधारी को अपना जीवन प्रिय होता है। उसकी रक्षा के लिए वह पूरा प्रयत्न करता है। लेकिन एक सच्चे सैनिक का स्वभाव यह होता है कि वह दूसरों की रक्षा करता है और इस कार्य के लिए वह अपने प्राणों का बलिदान भी खुशी-खुशी कर देता है। देश और मानवता की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान करने को वह सुअवसर मानता है। युद्ध को वह एक उत्सव समझता है। 'कर चले हम फ़िदा' कविता में सैनिक देश पर अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं। वे अंतिम साँस तक लड़ते हैं। अंत समय में भी उन्हें अपने प्राणों की नहीं, अपितु अपनी मातृभूमि की सुरक्षा की चिंता है। मानवता और देश के प्रति इसी समर्पण भाव, के कारण सैनिक को बलिदान के समय भी दुख का अनुभव नहीं होता, बल्कि उस समय भी उसके अंदर एक बाँकपन रहता है।

प्रश्न 23 : 'फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है' पंक्ति में किन दो अलग-अलग जश्नों का ज़िक्र किया गया है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : युद्ध में लड़ते-लड़ते अपने प्राणों की आहुति देने को भी कवि ने जश्न कहा है और वास्तव में युद्ध करते हुए अपने जीते-जी शत्रु का कदम अपनी धरती पर न पड़ने का प्रयास और उसकी सफलता एक सैनिक के लिए जश्न से कम नहीं होती, भले ही उस जश्न को मनाने में उसके प्राण ही क्यों न चले जाएँ। जीत का जश्न तो इस जश्न के मनने के बाद ही होता है। पहले जश्न में लोग आपस में गले नहीं मिलते, बल्कि ज़िंदगी और मौत आपस में गले मिलती हैं। कवि का विचार है कि पहले जश्न की समाप्ति पर ही जीत का उत्सव मनाया जाता है। इस पंक्ति में इन्हीं दो जश्नों की बात की गई है।

प्रश्न 24 : युद्ध-क्षेत्र में वीर सैनिक किस तरह अपना जीवन सार्थक मानता है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : अपना जीवन सभी प्राणियों को प्रिय होता है। कोई भी इसे यूँ ही खोना नहीं चाहता। असाध्य रोगी तक लंबे जीवन की कामना करते हैं। जीवन की रक्षा, सुरक्षा के लिए प्रकृति ने न केवल तमाम साधन उपलब्ध कराए हैं, वरन् सभी जीव-जंतुओं में उसे बनाए व बचाए रखने की भावना भी पिरोई है। इसलिए शांतिप्रिय जीव भी अपने प्राणों पर संकट आया देखकर उसकी रक्षा हेतु तत्पर हो जाते हैं।

दूसरी तरफ़ वीर सैनिक का जीवन इसके ठीक विपरीत होता है। वह अपने जीवन के लिए नहीं, बल्कि देशवासियों की आज़ादी और देश पर आए संकट से मुकाबला करने के लिए अपना सीना तानकर खड़ा हो जाता है। युद्ध-क्षेत्र में वीर सैनिक अपने देश की मान-मर्यादा एवं सुरक्षा के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करके ही अपने जीवन को सार्थक मानता है। वह किसी भी कीमत पर अपने देश के सम्मान को ठेस नहीं पहुँचने देता।

प्रश्न 25 : कविता के आलोक में सैनिक के जीवन की चुनौतियों का उल्लेख करते हुए भाव स्पष्ट कीजिए–'राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो'। *(CBSE 2019)*

उत्तर : एक सैनिक को अपने जीवन में बहुत विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। वह अधिकतर समय अपने परिवार से अलग रहता है। युद्ध में सदैव उसके सिर पर मौत का साया मँडराता रहता है। उसे ऐसे बर्फ़ीले क्षेत्र में रहना पड़ता है, जहाँ ठंड के कारण खून जम जाता है। बीहड़ जंगलों, रेगिस्तानों और अथाह समुद्र में भी वह अपना कर्तव्य निभाता है। सरदी, गरमी और वर्षा में वह अविचल रहता है। उसे अपने कर्तव्य के सामने भूख-प्यास की भी चिंता नहीं होती।

कवि ने देश की धरती को 'सीता' माना है। राम सीता के स्वामी थे और लक्ष्मण उनके सेवक थे। हमारे देश में प्रजातंत्र है। प्रजातंत्र में जनता ही शासक और जनता ही शासित होती है। कवि इस पंक्ति के द्वारा संदेश देना चाहता है कि तुम ही इस देश के स्वामी हो और तुम्हीं सेवक हो। जैसे राम और लक्ष्मण दोनों सीता के रक्षक थे, उसी प्रकार सभी नागरिकों का दायित्व है कि वे अपनी भारतभूमि की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें। कोई नागरिक यह न सोचे कि देश की रक्षा करने का काम तो केवल सैनिकों का है। यदि कोई रावणरूपी शत्रु हमारे देश की तरफ़ हाथ बढ़ाता है तो हमें उसके हाथों को काट डालना चाहिए। 'राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो।' पंक्ति का यही आशय है।

प्रश्न 26 : 'कर चले हम फ़िदा' कविता और 'कारतूस' एकांकी के भावों की तुलना कीजिए। विश्लेषण करते हुए अपने मत के समर्थन में तर्क प्रस्तुत कीजिए। *(CBSE SQP 2021 Term-2)*

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' कविता और 'कारतूस' एकांकी दोनों पाठ देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हैं। 'कर चले हम फ़िदा' कविता के लिए बलिदान होने वाला सैनिक देशवासियों का आह्वान करता है कि वे देश की रक्षा के लिए बलिदान करने को तैयार हो जाएँ। इसी प्रकार 'कारतूस' एकांकी का नायक वजीर अली देश को अंग्रेजों से आज़ाद कराने के लिए संघर्ष करता है और तत्कालीन अन्य राजाओं और नवाबों को भी इस कार्य के लिए संगठित करता है। अतः उपर्युक्त दोनों पाठ समान भावों से युक्त हैं।

प्रश्न 27 : 'कर चले हम फ़िदा' कविता के आधार पर बताइए कि सीमा पर शहीद होने वाले सैनिकों को मरते दम तक किस बात पर गर्व है और क्यों? *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' कविता में सीमा पर शहीद होने वाले सैनिकों को इस बात का गर्व है कि मरते दम तक उनमें बाँकपन रहा। दीनता या व्याकुलता की भावना नहीं आई। इसका कारण यह है कि वे अपने देश के लिए शहीद हो रहे हैं। उन्हें अपने सिर कट जाने का कोई गम नहीं है, क्योंकि उन्होंने जीते-जी हिमालय का सिर नहीं झुकने दिया।